International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, May 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शत्रुघ्न प्रसाद के ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी चेतना

महेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य–हिंदी
राजकीय कन्या महाविद्यालय, पाली
मो.न. 9214586210

वर्तमान में सृजनरत ऐतिहासिक उपन्यासकारों में डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने ऐतिहासिक उपन्यास परंपरा को जीवंत बनाने के साथ–साथ उसे गतिशील बनाने का कार्य किया है। आपने इतिहास के विभिन्न कालखंडों को आधार बनाकर 'सिद्धियों के खंडहर', 'शिप्रा साक्षी है', 'सुनो भाई साधो', 'तुंगभद्रा पर सूर्योदय', 'कश्मीर की बेटी', 'अरावली का मुक्त शिखर', 'शहजादा दाराशिकोह : दशहत का दंश', 'सरस्वती–सदानीरा' आदि ऐतिहासिक उपन्यास लिखे हैं।

डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक शोषित एवं पद दलित उपेक्षित नारी पात्र को अपने उपन्यासों में स्थान देकर समाज की कुत्सित मानसिकता को बदलने का प्रयास किया है। आपने मध्यकालीन परिवेश पर आधारित उपन्यासों में नारी की विकट व दयनीय स्थिति को उजागर किया। किस प्रकार समाज में नारी की मूल सत्ता तथा आत्मा को भुलाकर उसे अबला, कामिनी, रमणी, भोग्या, क्रीतदासी जैसी घिनौनी स्थिति के लिए बाध्य किया गया। समाज के हर वर्ग तथा हर अंग के द्वारा नारी को तिरस्कृत, शोषित, संत्रस्त और पददलित स्थिति में लाकर दुर्दशा ग्रस्त किया गया। नारी के प्रति वैदिक युगीन पूज्य भाव कुदृष्टि के रूप में परिवर्तित हो गया।

जीवन रथ का यह चक्र जो समाज की गतिशीलता का वाहक था, उसे भोग की वस्तु, सुंदर देह मात्र, मनोरंजन का साधन, काम वासना तृप्ति की वस्तु, उपेक्षा तथा तिरस्कार का आधार, पतित तथा सर्वाधिक हेय वस्तु, बलात संतानोत्पत्ति का साधन, अपने क्रोध तथा क्षोभ को तृप्त करने का साधन आदि अनेक दयनीय तथा पतित स्वरूपों में परिवर्तित कर कल्पतरु को कोयला बना दिया गया। स्त्री रूप में जन्म लेते ही दुर्भाग्य का आधार बनी नारी, आधी जनशक्ति पशु तुल्य व्यवहार का साधन बनी। उपन्यासकार ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से नारी की इसी दयनीय दशा को पाठक के सामने मुखरित कर उसकी चेतना को झकझोरने का प्रयास किया है।

डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से नारी की इसी दयनीय दशा को पाठक के सामने मुखरित कर उसकी चेतना को झकझोरने का प्रयास किया है। नारी चेतना से अनुप्राणित उपन्यास 'कश्मीर की बेटी' में कश्मीर की दो पुत्रियाँ राजकुमारी कोटा देवी तथा दासी पुत्र चाँदनी की दयनीय दशा से अभिमुख कराने का प्रयास किया है। उपन्यास में दरया शाह द्वारा बलात हरण करने तथा अपने साथ ले जाकर दस वर्ष तक उत्पीड़न व बलात्कार का शिकार बनी चाँदनी जीवन की आशा में उसके चंगुल से भागकर अपने घर आती है। उस पीड़ित नारी के प्रति संवेदना

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के स्थान पर समाज उसे तिरस्कार, घृणा व हीनता की दृष्टि से देख कर उसकी उपेक्षा करता है–''दूर बाहर खड़ी स्त्रियाँ बुदबुदा रही थी। दस बरस के बाद बेटी लौट कर आई है। अब यह क्या है? इसमें क्या बचा है? छिह! छिह! 'दूसरी बोल रही थी, 'कैसे आ गई? इसे कौन अपनाएगा?... अनब्याही बेटी दस बरस तक रख ली गई। भ्रष्ट! भ्रष्ट!''[1]

एक पीड़ित तथा शोषित नारी के प्रति संवेदना का भाव जब स्वयं अन्य स्त्रियाँ ही नहीं रख पाती तो समाज से क्या अपेक्षा रहेगी। समाज में स्त्री एक वस्तु मात्र रह गई है जिसे कोई भी बलात हरण कर लेता है तो उसी की वह वस्तु स्वीकार कर ली जाती है। नागा, भीखन तथा सर्वदेव चाँदनी की दुर्दशा पर विचार करते हैं–''यह तो ठीक है भीखन! पर जब कोई एक लड़की को रख लेता है तो वह उसकी मान ली जाती है, इच्छा या अनिच्छा से। स्त्री विवश है।''...''स्त्री क्या भू संपत्ति है या सोने का निर्जीव ढेला? कोई दुष्ट किसी स्त्री पर अधिकार कर सकता है। राजा और सामंत के ऊँचे भवन में पत्नी उपपत्नी केवल भोग विलास के लिए।... ओह!... धर्म, ब्याह, परिवार यह सब मान देने के लिए है। जब–तब धर्म और परिवार भी बचा नहीं पाते। पशु के समान पुरुष नारी का आखेट करते हैं।''[2] उपन्यास में वर्णित चाँदनी की दयनीय दशा समस्त नारी जाति की विडंबना तथा पीड़ा है। चाँदनी की दयनीय दशा सभ्य समाज तथा मानवता पर करारा प्रहार करती है।

पुरुष की कामवासना तथा उसकी पूर्ति के लिए नारी के शोषण के कारण ही हर युग में नारी इस दयनीय दशा को प्राप्त होती आई है। पुरुष अपनी कामुकता की पूर्ति के लिए नारी के शरीर के साथ–साथ उसके मन की कोमल भाव, इच्छा, आकांक्षा तथा जीवन के आनंद की चाह को भी पुष्प के समान मसल कर नष्ट करने के लिए लालायित रहता है।

आज जब हम अपने आप को आधुनिकवादी कहते हैं ऐसे समय में भी स्त्री की वही दयनीय दशा है। डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने नारी की इसी दयनीय दशा के माध्यम से वर्तमान परिवेश में नारी पर बढ़ते अत्याचार तथा बलात्कार की घटनाओं पर व्यंग्य कर पाठक की चेतना को जाग्रत करने का प्रयास किया है। आज भी शिक्षित तथा अशिक्षित समुदाय के सभी पुरुषों में नारी के प्रति वही कामुकता से युक्त कुदृष्टि रहती है जो मध्य काल में रही।

शताब्दियों से पुरुष ने अपने बाहुबल से, अपने पुरुषत्व से नारी को अपने वश में कर बलात अधिकार किया है। पुरुष प्रधान समाज के लिए नारी आखेट की वस्तु मात्र बनकर रह गई। आततायी पुरुषों ने अपने बल तथा अधिकारों का प्रयोग करते हुए नारी को भोग–विलास का साधन बनाया, उसका हरण कर बलात्कार तक किया। पुरुष का आखेट बनी नारी अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र सभी से उपेक्षित होकर इसे अपना भाग्य लेख मानकर स्वीकार करती आई है। नारी को सुंदर देह मात्र समझने वाला पुरुष उसे कभी षड्यंत्रों से, कभी कुचक्रों से, कभी धर्म की आड़ में, कभी परंपरा के बहाने अपनी कुत्सित मानसिकता से भोग की वस्तु बना देता है। चाँदनी स्त्री की विवशता पर विचार

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करते हुए कोटा देवी से कहती है–''बलवान अपने बल का प्रयोग स्त्री पर क्यों करता है। यह कब तक चलता रहेगा। वह कितनी निर्बल है। इसलिए अबला!!''[3]

'शिप्रा साक्षी है' उपन्यास में महाराज गंधर्वसेन अपनी कामुकता को पुष्ट करने के लिए जैन साध्वी सरस्वती का अपहरण करवा लेते हैं। उपन्यास में विधवा विद्युतलेखा, जैन साध्वी सरस्वती, नर्तकी सुमना, दासियाँ तथा अनेक नारियाँ पुरुष की कामुकता का आखेट बनती है।

मध्यकालीन दमनकारी मुस्लिम शासन में स्त्रियों को वस्तु मात्र समझकर जहाँ कहीं देखते उसे हथिया लेने की कुत्सित परंपरा बन गई। 'सुनो भाई साधो' उपन्यास में मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा हिंदू बेटियों का जबरन हरण कर उनका शोषण करने की प्रवृत्ति को उपन्यासकार ने प्रकट किया है। दिल्ली सुल्तान बहलोल लोदी द्वारा हिंदू बेटी के हरण को उपन्यासकार उजागर करते है–''ऊपर झरोखे में अंगूठी चमक उठी है।... वह अंगूठी चाहिए।' 'सूरजपाल ने काँपती आवाज में जवाब दिया, 'बच्ची की गुस्ताखी माफ करें हुजूर।'... 'नाज़नीन को पैशे खिदमत करो।' 'सूरजपाल ने पैरों को पकड़ लिया था। सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया। उनके इशारे पर कुछ सिपाही अंदर चले गये। सूरजपाल की बेटी जीबा लाई गई। वह चीख रही थी। घर की औरतें छाती पीट–पीटकर रो रही थी। जीबा घोड़े पर लाद दी गई। घोड़े चल पड़े थे। सूरजपाल चीखने लगा। धूल के पर्दे में घोड़े छिप से गए। शायद वह बेहोश हो गया था।... काफिला हवेली में लौट आया था। जीबा बेहोश हो गई। मगर उसे होश में लाया गया। वह आगोश में भी बेहोश हो गई थी।... फिर होश में लाया गया।''[4]

दक्षिण भारत के संघर्ष पर आधारित उपन्यास 'तुंगभद्रा पर सूर्योदय' में शाही हरम के आखेट का बार–बार शिकार बनी देवल देवी सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक से कहती है–''औरत तो मादा जानवर है। ऐयाश परस्त शाही महल मादा को नोचता रहता है। आप मेहरबानी करें.... हम दोनों को यहीं रहने दें।''[5] देवल देवी सुल्तान द्वारा हरम की शोभा बढ़ाने तथा उसकी अंकशायनी बनने से इंकार कर देती हैं। वह शाही महल में होने वाले स्त्री आखेट से नफरत करती है। इसी कारण वह कैदखाने में जिंदगी गुजारने को ज्यादा सही मानती है।

विदेशी आक्रमणकारी अपनी साम्राज्य विस्तार की नीति से असंगठित भारतीय राज्यों को एक–एक कर अपने अधीन करते गये। वहीं इन राज्यों ने अपनी विलासिता और सुख सुविधाओं के लिए इन विदेशी आक्रमणकारियों की अधीनता स्वीकार कर अपनी राजकुमारियों के डोले शाही हरम में भेजें। नारी विवशता तथा अपने पिता द्वारा राज्य के बदले बेची गई ये राजकुमारियाँ विवश होकर भोग विलास के साधन के रूप में मुगल हरम को सुशोभित करती हैं। ये विदेशी आक्रमणकारी रियासतों, ठिकानों तथा राज्यों पर विजय प्राप्त कर या उन्हें अपने अधीन कर वस्तु तथा मूल्य के समान इन राजकुमारियों का भोग करने के लिए बलात राजाओं को मुगल हरम में इन राजकुमारियों को भेजने के लिए विवश करते हैं। अपने पिता के राज्य के बदले सौंपी गई ये राजकुमारियाँ एक तरफ वस्तु

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तथा मादा जानवर के समान शाही हरम में शोषित होकर छटपटाती है तो वहीं दूसरी तरफ अपने हिंदू संस्कारों से दूर होने के कारण अरबो–ईरानी हरम में व्यथित रहती हैं।

डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों में बलात तथा लोभ–लालच के वशीभूत मुगल हरम में भेजी गई इन राजकुमारियों के मनस्ताप और अंतः पीड़ा को बारीकी से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। साथ ही इन राजकुमारियों की अंतः पीड़ा के माध्यम से उन तथाकथित सेक्यूलर इतिहासकारों पर भी व्यंग्य किया जो इनको रक्त संबंध की उपाधि देकर इनमें प्रेम कहानियाँ ढूंढने का प्रयास करते हैं।

उपन्यास 'अरावली का मुक्त शिखर' का उदाहरण दृष्टव्य है–''हमारे राजपरिवार ने हमें डोले में भेज दिया। हमें मुगल बादशाह से बँध जाना पड़ा। हमें इन्हें प्यार करना पड़ा। मन ने विद्रोह किया था। पर स्त्री तो पराधीन है। स्त्री जीवन की यही पराधीनता। ओह!!'' ''ये तुर्क मुगल कैदियों को गुलाम बनाकर बेचत–खरीदते हैं। हम अपने–अपने पिता के राज्य के बदले सौंप दी गई हैं। बेच दी गई हैं।... हम गुलाम हैं?''[6]

जिस जोधा अकबर की प्रेम कथाओं की प्रेत कल्पनाओं को बाजारवादी उपक्रमों में बेचा जा रहा है। जिसे अमर प्रेम कहानियों के रूप में फिल्मों तथा धारावाहिकों में परोसा जा रहा है। उन्हें जोधाबाई के इस आत्मग्लानि युक्त मनस्ताप को जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है जिसमें जोधा बाई अपनी पीड़ा तथा आत्म ग्लानि में निरंतर जलती हुई सोचती है–''हम इस शाही हरम में जानवर के समान या परकटे परिंदे के समान सोने के पिंजरे में बंद कर दी गई हैं।... यहाँ परदे पर परदा है। पर ये परदों के अंदर विलास की कठपुतलियाँ हैं। अपनी कोई हस्ती नहीं... कोई कीमत नहीं। ऐयासी की मांसल मूरतों की कितनी कीमत हो सकती है!''[7] शाही हरम में तड़पती तथा छटपटाती राजकुमारियाँ मात्र अपने को मांसल मूरत समझती है जिसे अपने–अपने राज्यों के बदले उपहार तथा मूल्य के रूप में सौंप दिया गया है।

'शिप्रा साक्षी है' उपन्यास में पौरुष के वशीभूत शोषित नारी की पीड़ा राजनर्तकी विद्युतलेखा व उसकी दासियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। विधवा के रूप में विद्युतलेखा अपने परिवार, बौद्ध मठ, शैव मंदिर की देवदासी से होते हुए राजनर्तकी बनने पर विवश हो जाती है। हर स्थान पर पुरुष के शोषण को भोगती हुई पलायन करती है लेकिन उसे शोषण की इस पीड़ा से मुक्ति नहीं मिलती। शकों की बर्बरता से आतंकित विद्युतलेखा विचार करती है–''दासियाँ अपने को बचा नहीं सकीं। वह स्वयं को उनके अश्लील संकेतों से कैसे बचाएँगी। उनकी पशुता से अपनी रक्षा कैसे करेगी। महाराज गंधर्वसेन ने उसे रक्षणीय नहीं समझा। उन्होंने विलास की सहचरी के रूप में ग्रहण किया था। धर्मरत्न उसके रूप पर मुग्ध है। आचार्य धवल भी। सब में एक ही रूप लोभ है। पशुवृत्ति है। वह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

पुरुष का आहार है।... पर यह शक तो पुरुषों के रूप में साक्षात पशु हैं। उनका बर्बर अट्टहास कितना लोमहर्षक था।'' [8]

उपन्यासकार ने नारी की विकट स्थिति के साथ–साथ धर्म, रीति, परंपरा तथा रुढियों के नाम पर जो कुचक्र चलाया जा रहा है उसका भी मुखर विरोध किया। इन्होंने अपने उपन्यासों में सती प्रथा, पर्दा प्रथा एवं देवदासी प्रथा के बहाने किस प्रकार नारियों पर शोषण, अत्याचार व भोग किया जा रहा था उसको उजागर कर पाठक की चेतना को झकझोरने का प्रयास किया। डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद प्रश्न उठाते हैं कि यदि स्त्री का पति के प्रति प्रेम भाव मानकर उसको सती किया जाता है तब पत्नी की मृत्यु होने पर उसकी चिता के साथ उसके पति को क्यों नहीं जलाया जाता। पुरुष प्रधान इस भारतीय समाज में इस प्रश्न का उत्तर किसी के पास नहीं मिलेगा।

शिक्षा व्यक्ति के मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक गुणों के विकास का ही आधार नहीं है वरन् उसके व्यक्तित्व के साथ सामाजिक व आर्थिक उन्नति व विकास का मूल आधार भी है। सामाजिक प्रतिष्ठा तथा स्वतंत्र चिंतन एवं विवेकशीलता के लिए शिक्षा की महती आवश्यकता है। जीवन–रथ के समान चक्र होने के कारण पुरुष के समान स्त्री को भी शिक्षा के माध्यम से स्वयं के समग्र विकास का अधिकार है। समाज स्त्री और पुरुष दोनों से मिलकर बना है। जब तक दोनों को समान शिक्षा तथा अवसर ना दिए जाएँगे तब तक समाज में संतुलन कायम नहीं होगा और ना ही समाज का सतत् विकास हो पाएगा।

नारी हर कालखण्ड की विकट परिस्थितियों में भी शिक्षा और ज्ञान प्राप्ति के लिए निरंतर अग्रसर रही है। डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने वैदिक यूनियन उपन्यास 'सरस्वती सदानीरा' में मित्र ऋषि की पुत्री मैत्रेयी अपने उच्चतम वैदिक शिक्षा प्राप्ति के अधिकार की याचना के साथ नारी अस्मिता से जुड़े शाश्वत प्रश्नों को भी उठाती है–''क्या तरुणी कन्या मात्र सुंदर शरीर है? क्या वह केवल कामिनी है? उसके पास मन–मस्तिष्क नहीं है? क्या वह अन्नमय कोष से ऊपर नहीं उठ सकती? सामान्यतः पुरुष स्त्री को काममय शरीर ही मानता है। दर्शनीय और स्पर्शनीय मानता है।... वह आक्रांता बन जाता है। ओह! विद्या बुद्धि पाने के उपरांत भी शरीर की प्रधानता?''[9]

उपन्यासकार ने मैत्रेय के माध्यम से नारी की शिक्षा तथा उच्चतम शिक्षा में पुरुषों की तुलना में अवसरों की अल्पता के होने वाली उपेक्षा को उजागर किया है। साथ ही स्त्री का तारुण्य तथा अविवाहित होना वैदिक युग में भी बाधक ही रहा। यही समस्या आज भी सामाजिक परिवेश में समग्रता से व्याप्त है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 5, Month 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

InHk &

1. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, कश्मीर की बेटी, सत साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृ. 77
2. वही, पृ. 78
3. वही, पृ. 184
4. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, सुनो भाई साधो, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1999, पृ. 30
5. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, तुंगभद्रा पर सूर्योदय, पुस्तक भवन, नई दिल्ली, 2001, पृ. 113
6. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, अरावली का मुक्त शिखर, शिवांक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 54
7. वही, पृ. 65
8. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, शिप्रा साक्षी है, साहित्य सदन, नई दिल्ली, 1986, पृ. 125
9. डॉ. शत्रुघ्न प्रसाद, सरस्वती सदानीरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2015, पृ. 197